

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर

अधिक उत्पादन हेतु खरीफ फसलों में बीजोपचार अवश्य करें!

दिनांक 22/05/2019

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर पूर्ण रूप से कार्य करना शुरू कर दिया है। प्रबन्ध समिति के दिशा-निर्देशन में कार्यरत वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. आर.पी. सिंह ने किसानों को सलाह देते हुए कहा है कि खरीफ फसलों की बुवाई से पूर्व बीज शोधन अवश्य करें। किसान भाईयों आप इस पुरानी कहावत से भलीभाँति परिचित हैं कि “जो जैसा बोता है, वैसा ही काटता है”। ऋग्वेद में वर्णित ऋचाओं में भी कहा गया है कि “सुबीजम् सुक्षेत्रे जायते सम्बर्धते”। स्वस्थ और निरोग बीज बोने से ही फसल स्वस्थ होगी तथा अधिक उत्पादन प्राप्त होगा। फसलों में बहुत से रोग बीज से ही फैलते हैं। रोग उत्पन्न करने वाले कारक बीज की सतह पर या बीज के अन्दर अथवा बीज के साथ मिले रहते हैं। यह रोगजनक बीज बोने के बाद अपनी अनुकूल परिस्थिति पाकर वृद्धि शुरू कर देते हैं। रोगाणुओं की उग्रता बढ़ने पर अंकुरण से लेकर फसल की वानस्पतिक व बालियाँ निकलने की अवस्था तथा बालियों में भी रोगों का प्रकोप हो सकता है जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। खरीफ फसलों के कुछ बीज जनित रोग प्रमुख हैं जैसे- धान में बीज सड़न, झुलसा, भूरा धब्बा रोग, शीथ झुलसा, जीवाणु जनित झुलसा, आभासीकण्ड (लाई फूटना), जीवाणु जनित पर्णधारी रोग; मक्का में तना सड़न, पत्ती अंगमारी, भूरा धब्बा रोग; ज्वार में कण्डवा, मूँग, उड़द, अरहर में पर्णदाग रोग, चारकोल बिगलन, तिल में अंगमारी रोग आदि प्रमुख हैं। इनके उन्मूलन के लिए बुवाई से पूर्व बीज को उपचारित करना आवश्यक है। पूर्वी मैदानी अंचल में खरीफ की प्रमुख फसल धान है जहाँ पर जीवाणु झुलसा या जीवाणुधारी रोग की समस्या ज्यादा हो, वहाँ पर नर्सरी डालने से पहले 25 किग्रा. बीज को 4 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन या 40 ग्राम प्लान्टोमाइसीन को 45 लीटर पानी में घोलकर रात भर भिंंगों दें। दूसरे दिन छाया में सुखाकर नर्सरी डालें। जिन क्षेत्रों में जीवाणु झुलसा की समस्या नहीं है, वहाँ पर बीज शोधन थिरम की 3 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज दर से अथवा कार्बेन्डाजिम अथवा विटोवैक्स पावर की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें। इसी प्रकार अन्य खरीफ फसलों का बीज शोधन कार्य करना चाहिए। किसान भाईयों यदि सम्भव हो सके, तो थिरम की 2 ग्राम मात्रा तथा कार्बेन्डाजिम की 1 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करें, क्योंकि थिरम संस्पर्शी रसायन है जो बीज के ऊपर रहने वाले रोगाणुओं का नाश करता है तथा कार्बेन्डाजिम अन्तःप्रवाही रसायन होने के कारण बीज के अन्दर पाये जाने वाले कारकों को नष्ट कर देता है।

खरीफ की प्रमुख दलहनी फसल अरहर है जिसका प्रमुख रोग उकठा है, इस रोग के नियंत्रण के लिए बताये गये के अनुसार बीज शोधन अवश्य करें अथवा रसायनों के अतिरिक्त जैविक नियंत्रकों जैसे-ट्राइकोडर्मा पाउडर की 10 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम की दर से शोधित कर सकते हैं। यदि जैविक व रासायनिक दोनों दवाओं से बीज शोधन करना चाहते हैं तो बुवाई से 4-5 दिन पहले रसायनों से बीज शोधन कर लें तथा बुवाई के एक दिन पहले जैव नियंत्रकों से बीज शोधन करें, लेकिन जैव नियंत्रकों की मात्रा दुगुनी कर दें। साथ ही राइजोवियम कल्चर से भी बीज शोधन करें इसके लिए 200 ग्राम राइजोवियम कल्चर 10 किलोग्राम बीज के लिए पर्याप्त होता है। अरहर में उकठा रोग नियंत्रण के लिए खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अवश्य करें तथा फसल चक्र जरूर अपनायें।

बीज शोधन से लाभ

बीजोपचार करने से लाभ ये होता है कि बीज के चारों ओर एक कवच सा बन जाता है जिससे अंकुरण के समय मृदा जनित रोगों से सुरक्षा होती है। बीजोपचार करने से अंकुरण प्रतिशत बढ़ जाता है तथा अधिक संख्या में स्वस्थ पौधे प्राप्त होते हैं जिससे पैदावार में वृद्धि होती है।

सावधानियाँ

बीजोपचार करते समय कुछ सावधानियाँ बरतने की जरूरत पड़ती है जैसे-इनका प्रयोग करते समय किसी भी प्रकार का धुम्रपान न करें। जिस व्यक्ति के घाव या अन्य आन्तरिक क्षति हो, तो ऐसे व्यक्ति से बीजोपचार न करवायें। उपचारित बीज को किसी गीले स्थान पर न रखें। आवश्यकतानुसार ही बीज को उपचारित करें। हाथों में दस्तानें और मुख पर कपड़े या मास्क का उपयोग करें। जहाँ तक सम्भव हो उपचारित बीज की बुवाई शीघ्र करें। दवा के खाली पैकटों तथा डिब्बों को नष्ट कर दें। जब बीज उपचार का कार्य पूर्ण हो जाय तो उसके बाद हाथ-पैर एवं मुँह को अच्छी तरह से साबुन से धोयें। यदि किसान भाई बतायी गयी विधि के अनुसार खरीफ फसलों में बीज शोधन का कार्य करते हैं तो फसल की वानस्पतिक अवस्था में फैलने वाले रोगों से निजात मिल जाता है जिससे अंधाधुंध रसायनों के प्रयोग में काफी कमी की जा सकती है। स्वस्थ एवं निरोग फसल प्राप्त कर अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है तथा वातावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं।